IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शकुंतिका उपन्यास में नारी विमर्श

डॉ. बाळासाहेब पगारे
बी. एनण्एन. महाविद्यालय, भिवंडी
जि.ठाणे.

भगवानदास मोरवाल आधुनिक हिंदी कथा साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षरों में से एक है। उन्होंने अछूते विषय और अनूठे कथ्य के कारण हिंदी साहित्य जगत में अपनी अलग पहचान बनायी है। शकुंतिका नारी जीवन पर आधारित एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। जिसमें स्पष्ट किया है कि बेटे ही कुल दीपक नहीं होतेए बेटियां भी कुलदीपक हो सकती है और वह परिवार का सहारा भी बन सकती है।

मूलतः भारतीय समाज व्यवस्था का आधार पितृसत्ताक मानसिकता है। जिसमें पुरुष को अत्यधिक महत्व है। उसे वंश बढाने का कारण मानकर कुलदीपक माना गया है। वैसे स्त्री और पुरुष परिवार रुपी रथ के दो पहिए होते हैं। दोनों एक समान होने चाहिएए परंतु परिवार में स्त्री को पुरुष की तुलना में दुय्यम स्थान प्राप्त होता है। बेटी को पराया धन मानकर उसके जन्म पर आज भी नाक. भौवे सिकुडी जाती है। प्रस्तुत उपन्यास में मोरवालजी ने पितृसत्ताक परंपरागत दकियानूसी मानसिकता पर प्रहार करते हुए स्पष्ट किया है कि बेटी के जन्म का स्वागत किया गया तो वह परिवार पर भार नहीं होत है बल्कि आधार बन सकती है।

भगवती और दुर्गा परंपरागत विचारधारा वाली मध्यवर्ग की महिलाएं हैए जो उपन्यास की केंद्रीय पात्र है। यह दोनों समूचे परंपरागत भारतीय महिलाओं की प्रतिनिधि हैए जो वंश बढाने के लिए बेटे के जन्म का समर्थन करती है। प्रारंभ में दुर्गा के घर पोते के जन्म पर थाली बजाकर आनंद व्यक्त किया जाता है। दुर्गा और भगवती को दो. दो बेटे है। दुर्गा के घर में चार पोतों का जन्म हुआ हैए परंतु भगवती के घर बडे बलवंत को दो बेटियाँ है और तीसरी संतान होनेवाली है। अतरू दुर्गा भगवती घर में बेटे की कामना करती है। भगवती के मन में डर है कि अगर बेटा पैदा नहीं हुआ तो वंश कैसे आगे बढेगा। वह कहती है किए भ अगर इस बार भी नहीं हुआ नए हम तो जीते जी मर जायेंगे पहले से दो.दो लडकियों को देखकर मेरे हाथ.पांव फूले जाते है।"[1] स्पष्ट है कि आज के आधुनिक युग में भी पुत्र रत्न की प्राप्ति की लालसा स्त्री के मन से कम नहीं हुई है। भारतीय स्त्री लगता है कि जब तक पुत्र रत्न की प्राप्ति न हो तब तक उसकी गोद पूरी नहीं होती है।

वस्तुतः पिछले कुछ दशक से हमारे समाज में स्त्री भ्रूण हत्याओं का सिलसिला तेज हुआ है। इसके पिछे कई सारे सामाजिक कारण है। समाज में बेट को पराया धन माना जाता है। साथ ही दहेज की समस्या भी जिम्मेदार है। दहेज प्रथा कानूनन खत्म होने के बावजूद अलग.अलग तरीके से उसकी लेन.देन हो रही है। दहेज देने के बावजूद ससुराल में लडकी सतायी जाती है। अतरू भारतीय पिता बेटी के जन्म का स्वागत नहीं करना चाहता है। देश में स्त्री.पुरुष के व्यस्त प्रमाण को देखकर शासन स्तर पर 'बेटी बचाओ' अभियान शुरु हुआ है। उपन्यास में मोरवालजी ने स्पष्ट किया है कि अगर हम बेटी के जन्म का स्वागत करते है और उचित शिक्षा देकर उसे आत्मनिर्भर होने का अवसर प्रदान करते हैए तो बेटियाँ परिवार पर बोझ नहीं बनती है। भगवती तीसरी पोती के जन्म से बहुत दुःखी होती है। दुर्गा के घर में चार पोते हैए परंतु उनके व्यवहार से सभी बस्तीवाले परेशान है। न तो वह पढ़ने में तेज हैए न संस्कारी है। जब कि भगवती की पोतियां

पढ़ने में तेज है साथ ही समझदार और संस्कारी भी है। गार्गी जब दसवी में अव्वल नंबर से पास होती है और दुर्गा का पोता विभोर दसवी में फेल होता है। तब पोते के व्यवहार से परेशान होकर दुर्गा कहती हैए भहे राम! ये सारे कौरव इसी घर में पैदा हो गये? एक भी तो काम का नहीं निकला।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि दुर्गा का परिवार बेटों के व्यवहार कितना परेशान है।

भगवती के घर में तीसरी बेटी के जन्म से मायूसी छा गयी है। उसके सामने परिवार का वंश बढाने की समस्या खडी हो जाती है। दूसरी ओर उग्रसेन के दोनो बेटे घर छोडकर दूसरी जगह चले जाते हैं। दुर्गा और उग्रसेन अकेले हो जाते है। घर हालत देखकर उग्रसेन दुःखी हो जाता है। दशरथ की पोतियां उनकी सेवा करते देखकर उसे सकुन मिलता है। दशरथ पोतियों के कारण कैसे नशीबवान है। यह बताते हुए उग्रसेन कहता हैए भजिस घर की दरो.दीवारें लडकियों की कूक से गूंजती रहती हैए उस घर को दुनिया का खुश नशीब परिवार क्यों कहा जाता है"[3] आज की आधुनिक जीवन शैली के कारण यह पाया गया है कि हर दस कपल के पिछे एक कपल निःसंतान है। सच कहा जाए तो ऐसे लोगों को नाउम्मीद होने की जरूरत नहीं है।अगर अनाथाश्रम से बच्चा गोद लिया जाये तो उन्हें बच्चा मिल सकता है और अनाथ को माता.पिता का प्यार मिल सकता है।भगवती का छोटा बेटा रुपेश और बहु जयंती शादी के छरू साल बाद भी निःसंतान है। सभी प्रकार के इलाज करने के बाद उन्होंने बच्चे की उम्मीद छोड दी है। दुर्गा भगवती की उम्मीद जगाते हुए बच्चा गोद लेने की सलाह देती है। दुर्गा की सलाह से प्रभावित हो जाती है। रुपेश और जयंती को मानसिक तौर पर बच्चा गोद लेने के लिए तैय्यार हो जाते है। दुर्गा लडके के बजाय लडकी गोद लेने की सलाह देती हैए क्योंकि वह अपने घर में लडकों का सुख अनुभव कर चूकी है। वह जानती है कि घर में तीन लडकियां घर में होने पर भी चौथी आनेपर घर का वातावरण बिगड नहीं सकेगाए परंतु लडका बडा होने पर घर की लडकियों के साथ न्याय करेगा कोई ग्यारंटी नहीं होगी। इस बारे में वह कहती हैए भइस वंश बढाने की भूख ने हमारी बेटियों की दुर्गत हुई है। थोडी देर के लिए मान लो लडके को। गोद ले लियाए तो इसकी क्या ग्यारंटी वह तेरी इन पोतियों को बहन का दर्जा दे ही देगा।"[4] यहां लेखक ने दुर्गा के माध्यम से घर में लकड़ियों के महत्व को रेखांकित किया है। लडकियां सेतू का काम करती है। वह दो व्यक्ती नहीं दो परिवार को जोडती है। भगवती दुर्गा की बात मानते हुए घर में तीन.तीन पोतियां होते हुए चौथी लडकी पोती के रुप में गोद लेने का निर्णय लेती है। यहां लेखक भगवती के माध्यम से परंपरा गत मानसिकता वाली औरतों को समय के साथ स्वयं को बदलने की अपील करते हैं। नहीं तो नयी पीढी के साथ समन्वय स्थापित नहीं कर पाओगे। रुपेश के द्वारा बेटी गोद लेने का फैसला उसकी माताजी का है। यह सुनकर डॉक्टर उसकी माताजी की तारीफ करते हुए कहते हैं किएभऐसे फैसले लेने के लिए बडी हिम्मत चाहीए। हम जैसे अच्छे.अच्छे पढे.लिखों की ऐसे फैसले लेने की हिम्मत नहीं होती हैए जैसी हिम्मत आपकी पुराने खयालोंवाली मां ने दिखाई है।"[5] नयी बच्ची अनाथाश्रम से लेने के लिए घर में सहमती बनती है। घर में नयी बच्ची का जोर.शोर से स्वागत होता है। घर में खुशी की लहर फैल जाती है। उसका नामकरण 'पीहू' किया जाता है। प्रायरू यह देखा गया है कि बेटे के जन्मदिन पर कुंआ पूजन की परंपरा है। पीहू लडकी होने पर भी उसके जन्मदिन पर घरवाले धूम.धाम से कुंआ पूजन करते है। अखबरों में खबर भी छप जाती है। यहां लेखक कुंआ पूजन प्रसंग के माध्यम से प्रचलित परंपरा को बदलने प्रयास किया है।

प्रायरू हमारे समाज में आज भी बिरादरी बाहर शादी करने के लिए विरोध होता है। ज्यादा पढी.लिखी लडकियों के साथ शादी करने के लिए तैय्यार नहीं होते हैं। उच्च शिक्षा प्राप्त कर सिया वकील और गार्गी डॉक्टर बनकर आत्मनिर्भर हो जाती है। भगवती का परिवार अपनी बेटियों पर गर्व करता है। सिया अपने सहपाठी बंगाली तपन के साथ शादी करने का फैसला करती है। सिया के बिरादरी बाहर शादी करने फैसले से भगवती नाराज होती है। वह परायी संस्कृतिए रीति.रिवाज और परंपराओं को लेकर चिंतित होती है। आश्रम की बच्ची को गोद लेनेवाली भगवती का सिया के आंतरजातीय विवाह के विरोध को देखते हुए उग्रसेन उसे समझाते हुए कहता हैए भबिरादरी३ण्ण्अच्छा खानदान३ण्घर.परिवार ये सब बाद की बातें हैं।सबसे बडी बात है कि बच्चों के आपस में मन मिलने चाहिए।"[6] बाद में भगवती तैय्यार होती है। सिया और तपन की शादी धूम.धाम से संपन्न होता है। यहां लेखक ने दो अलग.अलग संस्कृतियों का मिलन दिखाकर स्पष्ट किया है कि अगर रिश्ता अच्छाए सुयोग्य हो तो बिरादरीए खानदान और वंश आदि के बारे में सोचना आज व्यर्थ है। भगवती बुलबुल की शादी अपनी बिरादरी में अच्छेए संपन्न और एकलौते बेटेवाले परिवार में करवाती हैए परंतु वहां बुलबुल सुखी होने के बजाय सतायी जाती है। उसके ससुरालवाले लालची होने के कारण लेन.देन के बारे में उसे सताते हैं। इस बारे में गार्गी

कहती हैएभअम्माए लालची आदमी का न कोई धर्म होता हैए न जात.बिरादरी न कोई ईमान होता हैए न कोई नीयत।”, सिया उन्हें कानूनी दावपेचों द्वारा सबक सिखाती है।

हमारे समाज में जहां दो भाई होते हैए वहां बटवारे की समस्या खडी हो जाती है। उग्रसेन के दोनो बेटे माता.पिता की छोडकर अलग हो जाते है। जयदाद के बटवारे के बाद बहुऐं उन्हें घर तक छोडना नहीं चाहती है। दोनों अकेलेपन को महसुस करते है। भगवती के घर में हर वक्त देखभाल करते नजर आती है। तीनों पोतियों की शादी के बाद भगवती और दशरथ अकेले हो जाते हैए क्योंकि उनके घर की गौराऐं एक.एक करके अपने घर चली जाती है। शादी के बाद अपने घर जरूर जाती हैए परंतु वह हमेशा अपने माता.पिता की चिंता करती रहती है। अगर दामाद को बेटा मान लिया जाए तो दो परिवार एक हो सकते है। बेटियां कभी अपने माता.पिता से अलग नहीं होती है। पीहू भी पढाई हेतु ऑस्ट्रेलिया चली जाती हैए परंतु दादा.दादी के बारे में संवेदनशील दिखाई देती है। उनकी मृत्यु पर अत्यधिक भावुक होती है। उसने ऑस्ट्रेलिया में दादा.दादी के नाम से ‘डीण बीण्फाउंडेशन’ का गठन करती हैए जिसके माध्यम से अनाथाश्रम को डोनेशन देती है। पीहू सभी परिवार को जहाँ से उसे गोद लिया था उस आश्रम में ले जाकर आश्रम को तीस लाख का डोनेशन देती है। दादा.दादी के परिवर्तनशील विचारधारा पर गर्व महसुस करती है।

बलवंतए रेवतीए रुपेश और जयंती वृध्द हो गये हैए परंतु बेटियों ने अकेलेपन का ऐहसास होने नहीं दिया है। निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि स्त्री और पुरुष एक ही रथ के दो पहिए होते हैएजो एक समान होते हैं। पितृसत्ताक मानसिकता को लेकर चलनेवाला समाज स्त्री को समानता का अधिकार नहीं दे पाता है। बेटे को वंश बढाने के खातीर कुलदीपक और भविष्य की लाठी माना जाता है। बेटी बके जन्म पर उदासी छा जाती है। मोरवाल जी ने उपन्यास के माध्यम से संदेश दिया है कि समय बदल रहा हैए लडकी का घर में स्वागत करके। उसे अच्छे संस्कार और शिक्षा दी जाये तो वह आत्मनिर्भर होकर सिया और गार्गी की तरह परिवार का सहारा बन सकती है। अतरू लेखक ने पितृसत्ताक मानसिकता पर प्रहार करताई हुए बेटी के जन्म का स्वागत करके अच्छी परवरिश करने की अपील की है।

संदर्भ :

1. शकुंतिका.... पृष्ठ 7
2. शकुंतिका.....पृष्ठ 18
3. शकुंतिका .....पृष्ठ 21
4. शकुंतिका..... पृष्ठ 39
5. शकुंतिका.....पृष्ठ 54
6. शकुंतिका.....पृष्ठ 86
7. शकुंतिका.....पृष्ठ 97

शकुंतिका..... भगवान दास मोरवाल , राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.